HSS
05

350

परंपरा और आधुनिकता के बीच की टकराहट

परंपरा और आधुनिकता दो ऐसी शब्द- जो आज के सांस्कारिक और सामाजिक स्थर में बहुत ही ज्यादा महत्वपूर्ण है। यह दोनों चीज़े संभालना अपने आप में एक बहुत बड़ी बात है और आज यही दो चीज़े पूरे भारत और साथ-साथ केरल के सबसे बडी चुनौति है। इक्कीसवीं सदी में दोनों चीज़ों को नए नज़रिए से देखना मुमकिन तो है, लेकिन कहीं न कहीं हम पूरी तरह उलझते जा रहे है इस बात पर कोई शक नहीं है।

HSS
05

परम्परा एक ऐसी भाव है जो पूरे विश्व से हमें अलग बनाते है। भारत जैसे राष्ट्र 'विश्वगुरु' के नाम से अगर प्रशस्त है तो इसमें परम्पराओं के और आचारों का बहुत बड़ा हाथ है। मानविक मूल्यों को सीने से लगाते हुए अगर परम्परा और आचारों को साथ लिया जाए तो वह अपने आप में बहुत बड़ी बात है।

"वसुधैव कुटुम्बकम्", "अहं ब्रह्मास्मि", "अपः एव ससर्जादौ" जैसे मूल्यों को साथ लेकर और सूक्तों को अपनाकर ही भारतीय संस्कृति का विकास हुआ। हमारे वेद वेदान्त और इतिहास हमेशा से ही विश्व मे अव्वल रही है, इस बात पर कोई संदेह नही है। शायद इसी वजह से हमारी संस्कृति के बारे पढने केलिए लोग बाहर से आते है।

HSS
05

इतिहास के पन्नों में बहुत सारे ऐसे आचारें और परम्पराएँ थे जो मानविक मूल्यों के खिलाफ थे। 'जौहर' से लेकर सती प्रथा के आचरण तक बहुत सारे ऐसी चीज़े थे जो स्त्रीयों के जीने की अधिकारों को छीनते थे। बहुभार्यात्व भी एक ऐसी चीज़ थी जिन्हे हटाने में श्री राजाराम मोहनरोय ने प्रयत्न किए हैं।

"बदलाव प्रकृति का नियम है।"

– अरिस्टोटिल

यह वचन एक ऐसी वचन है जो सब लोग समझते तो है लेकिन आगे उसे सही तरह से पहचानते और नीजी ज़िन्दगी में उपयोग नही करते है। बदलाव के सीढ़ी चढ़ने मे दिक्कत तो होंगें लेकिन चढ़ना ज़रूरी है।

HSS
05

इतिहास के पन्नों में बहुत सारे ऐसे आचारें और परम्पराएँ थे जो मानविक मूल्यों के खिलाफ थे। 'जौहर' से लेकर सती प्रथा के आचरण तक बहुत सारे ऐसी चीज़े थे जो स्त्रीयों के जीने की अधिकारों को छीनते थे। बहुभार्यात्व भी एक ऐसी चीज़ थी जिन्हे हटाने में श्री राजाराम मोहनरोय ने प्रयत्न किए है।

"बदलाव प्रकृति का नियम है।"

– अरिस्टोटिल

यह वचन एक ऐसी वचन है जो सब लोग समझते तो है लेकिन आगे उसे सही तरह से पहचानते और नीजी ज़िन्दगी में उपयोग नही करते है। बदलाव के सीढ़ी चढ़ने मे दिक्कत तो होंगें लेकिन चढ़ना ज़रूरी है।

HSS
05

सितंबर 28 केरल के इतिहास में एक बहुत बड़ा दिन था। शबरिमला में युवतियों का प्रवेश संबंधित माननीय उच्चन्यायालय के प्रस्ताव पूरे भारत में चर्चा का विषय था। भारतीय संविधान के सबसे बड़ा और ऐतिहासिक नियम बन चुके है शबरिमाला में युवतियों का प्रवेश।

पर यहीं एक स्थल है जहाँ पर आज बहुत ज्यादा समस्याएँ चल रहे है। यहीं पर हमारे परम्पराओं के और आधुनिकता में सवाल उठाते है।

भारत जैसे राष्ट्र में धार्मिकता के बहुत बड़ा मूल्य है। धार्मिक चीज़ों में अगर किसी ने हाथ बढ़ाया तो यह सच है कि युद्ध समान अवस्था बन जाते है। शायद यही हम कई दिनों से केरल में भी देख रहे है।

HSS
05

सिर्फ शबरिमला और अयोध्या के बाबरी मस्जिद ही नहीं ऐसे कई सारे चीज़े है जो पारम्परिक आचारे और हमारे धर्मनिरपेक्षता साथ ही आधुनिकता में सवाल उठाते है।

भारत जैसे विकस्वर राष्ट्र में आज विकास हो रहा है। सामाजिक-सांस्कारिक-आर्थिक और राजनैतिक मण्डल में विकास हो रहा है। हम आज मंगल के भ्रमणपथ तक झंडा लहरा चुका है, फिर भी हम वही के वही फसे है जहाँ पर आज आचारों के नाम पर स्त्रीयों को बाहर रखते है।

'मुत्तलाख' एक ऐसी प्रथा है जो आज कानूनी तौर पर भारतीय संविधान में नही है क्योंकि परंपराओं के नाम पर घर में गुलाम के तरह रहना उनके लिए मनज़ूर नही थे।

HSS
05

मुत्तलाख जैसे प्रथाओं में स्त्रीयों को मानविक स्थर भी नही देते है और पुरुषों के अनुसार उन्हें बेघर बनाया जाता है। यह सिर्फ परंपराओं का पालन था कई सालों से जो आज जाकर अनीती थी इस बात पर गौर फरमाया गया।

सिर्फ मुत्तलाख ही नहीं हाजी अलि दर्गा, में स्त्रीयों का प्रवेश भी पिछले साल मुम्बई न्यायालय ने अनुमति का स्वर दिया था।

हम कई अन्यायों के बारे में तब सोचते है जब यह कानून के नज़रों के आगे आते है। कानून के दायरों में पहुँचने से पहले ही हम क्यों यह नही समझते है कि कुछ चीज़े गलत होते है और उनके खिलाफ आवाज़ उठाना ज़रूरी है।

HSS
05

आधुनिकता का मतलब यह नहीं है कि इसके चलते हम कुछ भी कर सकते हैं। आधुनिकता नज़रिए में होना ज़रूरी है। शायद इसी वजह से आज स्त्री, पुरुष और भिन्नलिंग के लोग भी यहाँ खुशहाली से रहते हैं जो सितंबर 25 के 'सेक्शन 377' के आधार पर दूर हैं। खुशी के बाद यह है कि केरल में 'कोच्ची मेट्रो' के अवतरण के साथ ही उन्हें अवसरे भी दिए थे। जहाँ कई वर्षों पहले उन्हें आचारों के नाम पर किसी भी घर में खुशी के मौके में हटाया जाता था और मनुष्यबलि चढ़ाते थे आज वह पूरे इत्मिनान के साथ घर चलाते हैं, दफ्तरों में काम करते हैं और सामाजिक व्यवस्थिती को सुगठित करने के लिए अपना थोड़ा योगदान देते हैं।

HSS
05

जनवरी में जब भारत के उच्च न्यायपीठ के दरवाज़े खुलेंगे तो पूरे भारत के निगाह वहीं पर होंगे क्योंकि, भारत के सबसे बड़े दो चर्चाविषयों का आखिरि फैसला वहीं पर उस महीनें में होगा। एक बाबरी मस्जिद और रामजन्मभूमि में मन्दिर का निर्माण, दूसरे शबरिमला विषय।

यह हमारे लिए इतनी ज्यादा क्यों आवश्यक है कि जिन्हें जाना है उन्हें रोके। अगर ~~कि~~ नियमों का संचालन उस विषय पर है तो उसे उसके आधार पर नियमों के साथ चलाना बेहद ज़रूरी है। भारत जैसे गणतान्त्रिक और लोकतान्त्रिक देश में संविधान का मूल्य बहुत है।

HSS
05

पारम्परिकता और आधुनिकता को एक ही नज़रिए से देखना मुश्किल है क्योंकि दोनों का भी स्थान आज हमारे भारत में मौजूद है। जहाँ सवाल शबरिमला की है तो यह नियम युद्ध 1991 से शुरू हुए है और मेरे ख्याल से यह आगे भी चलेंगे तो यहाँ जो इस सदी में छुआछूत और असमानता का कोई स्थान नहीं है यह समझने की ज़रूरत सबको है।

कुमारनाशन की प्रसिद्ध साहित्यांश 'बदलो नियमों को' (माडविन चटङ्गले) (मलयालम)

आज के केरल में और पूरे भारत में बहुत ही ज़्यादा मोल है। क्योंकि हम आज इसी दौर से गुज़र रहे है जहाँ सालों पहले अय्यङ्काली, चट्टम्पिस्वामि जैसे नवोत्थान पुरुषे गुज़रे थे।

HSS
05

जब दो ध्रुव के चीज़े सामने आते है तो साहिर सी बात है कि वहाँ टकराव तो आते है। आचार-अनुष्ठान और आधुनिकता भी ऐसे ही है। दोनों को संभालने में महनत तो लगेंगे ही लेकिन चलाकर आगे निकलने की ज़िम्मेदारि हमारे हाथों में है।

बहुत सारे लोग ऐसे भी है जो नियमों को गलत इरादे से देखते है और उपयोग करते है। असमानता को कैसे घटाने है इस बात पर ज्यादा गौर फरमाना चाहिए और जो नियम मिले है उन्हे किसी के भी सामाजिक विकार को ठेस पहुँचाने की ज़िम्मा नहीं उठानी चाहिए। यह हमारे सामाजिक समाधान और लोकतान्त्रिक व्यवस्था पर बहुत हानि पहुँचा सकते है।

HSS
05

इस विषय के एक अलग स्थर भी मैं दिखना चाहुँगी। हमारे परंपराओं के हिसाब से नारियों को युद्ध मुख में जाने की अनुमति नहीं है। यहीं एक वजह से भारतीय सेना में नारियों का दाखिला कम है। और जो भारतीय सेना में उपस्थित हैं उन्हें युद्ध में जाने की अनुमति नहीं हैं। परम्पराएँ और अनाचार सिर्फ धार्मिक मण्डलों में ही नहीं ऐसे स्थरों में भी उपस्थित है। अफसोस की बात यह है कि हम ऐसे स्थरों के बारे में सोचते ही नहीं हैं। शायद हमारे परम्पराओं के दृष्टिकोण धार्मिक चीज़ों में सीमित हैं।

परम्पराएँ हमारी पहचान है तो वहीं सीक्के की दूसरी पहलू है आधुनिकता। हमें यह सोचना है कि कहीं हमारी परम्पराएँ हमारे विकास में बाधा बन न जाए।

HSS
05

परम्परा और आधुनिकता दोनों को संभालने में ही हमारी खुशी है। हमे सिर्फ हमारे पुराने ख्याल में नहीं रहना चाहिए। उससे बाहर निकलकर हमें नए भारत को बनाना है। इक्कीस्वीं सदी का भारत सभी देशों के लिए मिसाल है इस बात को याद रखना है और हर स्थर मे विकसित बनने के लिए कोशिश करना चाहिए। इसलिए

"उत्तिष्ठत, जाग्रत,
प्राप्य वरान् निबोधत"